B.A (HONOURS) PART – 2
PHILOSOPHY – PAPER 4

Dr.Raj Narayan Singh

Department of philosophy

R.R.S College, Mokama

Patliputra University, Patna

देकार्त्त, स्पिनोजा और लाइबनिट्ज के अनुसार शरीर और मन (आत्मा) का सम्बन्ध

- शरीर और मन (आत्मा) का पारस्परिक सम्बन्ध बुद्धिवादी दार्शनिकों के लिए बहुत बड़ी समस्या है। देकार्त्त, स्पिनोजा और लाइबनिट्ज तीनों ने इस समस्या पर अपना विचार दिया है –

देकार्त्त का मन शरीर सम्बन्ध (अंतर्क्रियावाद)

- देकार्त्त के अनुसार मन और शरीर भिन्न-भिन्न द्रव्य है। मन का गुण विचार है तथा शरीर का गुण विस्तार है। मन सक्रिय है, शरीर निष्क्रिय है। दोनों चेतन और अचेतन द्रव्य एक दुसरे से भिन्न है। परंतु देकार्त्त इन दोनों में सम्बन्ध मानते हैं।

यह कैसे सम्भव है? देकार्त के अनुसार मानव शरीर में पीनियल ग्लैण्ड (pineal gland) नामक एक विशेष ग्रंथि है। इसी ग्रंथि के सहारे मैन में होने वाली क्रिया-प्रतिक्रिया का प्रभाव शरीर पर और शरीर की क्रिया–प्रतिक्रिया का प्रभाव मन पर पड़ता है। यही देकार्त का अंतर्क्रियावाद या क्रिया-प्रतिक्रियावाद है।

स्पिनोजा का मन-शरीर सम्बन्ध(सायानान्तरवाद)

- स्पिनोजा भी देकार्त के द्रव्य को मानते हैं। परन्तु मन और शरीर द्रव्य नहीं, वरन् द्रव्य के स्वरूप हैं। द्रव्य तो केवल एक है ईश्वर।
- मन और शरीर एक ही परम द्रव्य ईश्वर के स्वरूप हैं। दोनों आपस मे समान हैं; समांतर है। इनमें कोई किसी का कार्य – कारण नहीं। ये दोनों आपस में समांतर है। स्पिनोजा के अनुसार विचार के बिना विस्तार नहीं और विस्तार के बिना विचार नहीं। दोनों का अस्तित्व सापेक्ष है। ये दोनों अपयश में विरुद्ध नहीं, समान है। यहीं स्पिनोजा का समानान्तरवाद है।

लाइबनिट्ज का मन-शरीर सम्बन्ध (पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धांत)

लाइबनिट्ज के अनुसार चेतना द्रव्य का मौलिक गुण है। कोई भी ऐसा द्रव्य नहीं जो चेतन न हो। पाषाण से लेकर ईश्वर तक न्यून या अधिक मात्रा में सभी चेतन है। लाइबनिट्ज के अनुसार शरीर या जड़ केवल निम्न कोटि का चिदणु है और मन (आत्मा) उच्चकोटि का चिदणु है। दोनों में केवल मात्र का भेद है। शरीर कम चेतन है, आत्मा अधिक चेतन है।लाइबनिट्ज के अनुसार शरीर का विकसित स्तर आत्मा है और आत्मा कम विकसित स्तर है। आत्मा शरीर के कार्यों को प्रतिबिंबित करता है।

चेतन और अचेतन समस्या का समाधान के लिए लाइबनिट्ज पूर्व – स्थापित सामंजस्य का सहारा लेते हैं।

शरीर काम चेतन है, आत्मा अधिक चेतन है। दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं, सहचारी हैं। दोनों में एकरूपता है। इस एकरूपता को ईश्वर ने पहले से ही स्थपित कर दिया है यहीं पूर्व – स्थापित सामंजस्य है। उदाहरणार्थ -:

1. एकतान संगीत में वाद्‍य- यंत्र भिन्न – भिन्न हैं परंतु सबों से एक ही स्वर की सृष्टि होती है।
2. दो घड़ियों की गति में समानता है। घड़ीसाज ने दोनों घड़ियों के यन्त्र को इस निपुणता से बनाया है कि एक के समान दूसरे में भी समय होता है